मैंने सुषुम्ना के द्वार में प्रवेश किया

लल्लेश्वरी द्वारा लिखित वाख

लल्ल, यानी मैंने अपने अन्तर की गहराई में, सुषुम्ना के द्वार में प्रवेश किया
और शिव-शक्ति का मिलन देखा।
वाह! कितना अद्‌भुत!
मैंने सहस्रार में स्थित अमृत-सरोवर में
स्वयं को पूर्णतया लीन कर दिया।
जीवित रहते हुए ही मेरी मृत्यु हो गई है।
अब संसार मेरा क्या कर लेगा!

निरन्तर अभ्यास द्वारा
साधक समस्त प्रकट जगत के साथ एकाकार हो जाता है।
नाम व रूप का जगत शून्य में विलीन हो जाता है।
जब शून्य का लोप हो जाता है,
तब केवल परम तत्त्व रह जाता है जो समस्त दुःखों के परे है।
हे साधक, यही सच्चा उपदेश है।

अंग्रेज़ी भाषान्तर © २०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

लल्लेश्वरी

परिचय : उमाकान्त कोरी

लल्लेश्वरी—जो ललद्यद अर्थात् लल्ल माता के नाम से भी जानी जाती हैं—एक कवयित्री और रहस्यवादी सन्त थीं जिनका जन्म चौदहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के दौरान कश्मीर में हुआ था; कश्मीर, उत्तरपश्चिमी भारत में एक ख़ूबसूरत वादी है जो पहाड़ों, जंगलों व सरोवरों से घिरी हुई है। कम आयु में ही लल्लेश्वरी अपने श्रीगुरु, सिद्ध श्रीकण्ठ से मिलीं जिन्होंने लल्लेश्वरी को आध्यात्मिक दीक्षा प्रदान की और उन्हें अद्वैत काश्मीर शैवदर्शन का उपदेश दिया जो लल्ल के जन्म-स्थान में कुछ सदियों पहले काफ़ी प्रचलित था।

यह शैव परम्परा सिखाती है कि वह परम चेतना यानी चिति जो हमारी आत्मा है, वही बह्माण्ड व समस्त जीव बन गई है। यह चिति 'शिव' के नाम से जानी जाती है और क्योंकि, शिव अन्तरतम आत्मा है, इसलिए श्रीगुरु की कृपा और साधना में दृढ़-निरन्तर प्रयत्न द्वारा आध्यात्मिक साधक इस अभिज्ञान में अवस्थित हो सकता है कि परम दिव्यता उसकी अपनी ही है। यह प्राप्ति एक साधक की दृष्टि को रूपान्तरित कर उसके समक्ष यह प्रकट करती है कि उसके आस-पास की हर चीज़ वास्तव में भगवान शिव के दिव्य प्रकाश का प्रकट रूप है। लल्लेश्वरी इसी दिव्यावस्था को प्राप्त थीं। वे अपने इष्टदेव, भगवान शिव की अनुभूति में इतना डूब गई थीं कि देहभाव से ऊपर उठकर, अवधूत स्थिति को प्राप्त हुईं। ऐसा कहा जाता है कि अपने जीवन के अन्त में, एक ज्योतिरूप में विलीन होकर उन्होंने महासमाधि ली और शिव-सृष्टि के साथ एकाकार हो गईं।

पिछले सात सौ वर्षों से लल्लेश्वरी का सार्वभौमिक व ग़ैर-साम्प्रदायिक भावना के लिए कश्मीर में हिन्दू व मुस्लमान, दोनों धर्म के लोगों द्वारा सम्मान किया जाता है। इन महान भगवद्भक्त की सिखावनियाँ हिन्दू, सूफ़ी और सिख धर्म की शिक्षाओं से प्रेरित हैं। हालाँकि उनका जन्म एक पारम्परिक ब्राह्मण परिवार में हुआ तथापि लल्ल ने स्थानीय भाषा में अपना काव्य लिखा और इस प्रकार समस्त कश्मीरियों के लिए उन गूढ़ शैव सिखावनियों को सुलभ बना दिया जो पहले केवल संस्कृत में ही दी जाती थीं। उन्होंने चार पंक्तियों वाले पद्यों की रचना की जिन्हें "वत्सुन" या "वाख" कहा जाता है। कश्मीरी भाषा में वाख का अर्थ होता है "वाणी"। इन वाख को कश्मीरी भाषा में रचित सबसे आरम्भिक साहित्यिक कृतियाँ माना जाता है।

अपने वाख "मैंने सुषुम्ना के द्वार में प्रवेश किया," में लल्लेश्वरी प्रथम-पुरुष का प्रयोग कर यह दर्शाती हैं कि वे स्वयं अपने अनुभव का वर्णन कर रही हैं। भारत में, भक्तिमार्ग के कविजनों ने अपनी रचनाओं में भक्तिमय प्रेम की आत्मीयता को व्यक्त करने के लिए प्रधान रूप से इस प्रकार के

व्यक्तिगत सम्बोधन की शैली का सर्वप्रथम प्रयोग किया। यहाँ लल्ल बताती हैं कि उन्होंने जिस स्थिति को प्राप्त किया, वह उन सभी के लिए सुलभ है जो अपने आप को निरन्तर आध्यात्मिक साधना के प्रति समर्पित करते हैं। इस स्थिति तक पहुँचने का मार्ग मिलता है, सुषुम्ना में प्रवेश कर उसमें ऊर्ध्वगमन करने से। सुषुम्ना, मनुष्य के सूक्ष्म शरीर में विद्यमान मध्य नाड़ी है जिसमें से श्रीगुरुकृपा द्वारा जाग्रत कुण्डलिनी शक्ति सहस्रार की ओर ऊर्ध्वगमन करती है। सहस्रार, सिर के ऊपरी भाग में स्थित प्रकाश का अलौकिक केन्द्र है जहाँ पर आन्तरिक आध्यात्मिक यात्रा की परिणति होती है। यहाँ पहुँचकर साधक शिव और उनकी दिव्य शक्ति के साथ एकाकार हो जाता है। इस एकाकार की स्थिति में एक साधक का पृथकत्व का भाव विलीन हो जाता है। जैसा कि लल्ल कहती हैं, "जीवित रहते हुए ही मेरी मृत्यु हो गई है;" और इसके स्थान पर "केवल परम तत्त्व रह जाता है जो समस्त दुःखों के परे है।"

यही लल्ल का अनुभव था और उनके लिए यही सच्चा उपदेश था।

© २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।